हि०१

श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड़, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

१०

ऐनरोलमेन्ट नंबर

शहर ______

मार्च - २०१९

विद्यार्थी का नाम ______

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	भाव से
(२)	पुण्य - पाप
(३)	संरोहिणी
(४)	मनोबल - आत्मबल
(५)	निस्पृही
(६)	एकासना
(७)	कृतज्ञता
(८)	मध्यम में उत्कृष्ट
(९)	विगई
(१०)	प्रत्येक बुद्ध
(११)	सहायता-सहकार
(१२)	श्वेतांबिका
(१३)	धर्ममय
(१४)	चोल (मंथेवुं)
(१५)	उपकारीओ
(१६)	शिवयात्रा
(१७)	सौधर्मेन्द्र
(१८)	ससित्थेणवा
(१९)	असंख्य
(२०)	पात्रता

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	अनादि अनंत
(२)	अवद्ध
(३)	कृतघ्नता
(४)	संवृत
(५)	कौशांबी
(६)	अनंतवां
(७)	स्वादिम
(८)	स्वयं बुद्ध
(९)	अधमाधम
(१०)	चमरेन्द्र
(११)	सम्यग दर्शन
(१२)	लब्ध लक्ष्य
(१३)	पच्चघृत
(१४)	अर्धपुद्गलपरावर्तन
(१५)	मोहादिक
(५)	कृतज्ञ
(६)	भरत
(७)	कपिल वगैरह
(८)	अलेपकृत
(९)	सुख-पूर्वक
(१०)	निःस्पृह
(११)	वनस्पतिकाय
(१२)	चौयांसी
(१३)	संक्षिप्त
(१४)	दुर्लभ
(१५)	पदार्थ
(१६)	स्वयं बुद्ध
(१७)	परावर्तन काल
(१८)	गहन
(१९)	आयुष्य
(२०)	स्थिति.

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	पाया है
(२)	कहा हुआ
(३)	विधि बिनाभी
(४)	वृद्धि

प्रश्न-४ जोडियाँ लगांओ

(१)	૪	(६)	૯
(२)	૬	(७)	૫
(३)	૮	(८)	૧
(४)	૭	(९)	૨
(५)	૧૦	(१०)	૩

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	૧,૨૫૦૦૦
(२)	૪
(३)	૬
(४)	૧૭૫
(५)	૫૨ લાખ
(६)	૩
(७)	૫
(८)	૮
(९)	૧૮૦
(१०)	૧૧

प्रश्न-६ ✓ या × / प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	×	(१)	૨૪
(२)	✓	(२)	૧૭
(३)	×	(३)	૫
(४)	✓	(४)	૧૩
(५)	✓	(५)	૧૯
(६)	×	(६)	૯
(७)	×	(७)	૨૬
(८)	✓	(८)	૧૪
(९)	✓	(९)	૨૧
(१०)	×	(१०)	૧૮

प्रिंटिग भूल के कारण अथवा हमसे रह गयी भूल के कारण विद्यार्थीओं को जो तकलीफ होती है, उसके लिये हम क्षमाप्रार्थी है। ऐसे संजोगो में विद्यार्थी को उसका पूरा मार्क दिया जाता है।

रीमार्क ______ जांचनेवाले की सही ______

प्रश्न - ८

१. साधु आहार करने बैठे हो और वहाँ गृहस्थ आये और फिर वह चला जाये, तो एक क्षण सबूर करे और बैठा रहे। पर अगर गृहस्थ वहाँ खडा ही रहे और उसकी नजर पडे तो साधु वहाँ से उठकर दूसरे स्थान पर आहार ले। गृहस्थ एकासना करने बैठने के पश्चात जिसकी दृष्टि पडने पर अन्न पचे नहीं ऐसे पुरूष की दृष्टि पडे अथवा साँप आवे, चोर आते, कैदी आकर खडा रहे, अचानक आग लगे, घर गिरने लगे, पानी की बाढ आए, ऐसे कारणों से स्वयं की जगह से उठकर दूसरी जगह जाकर एकासना करे तो पच्चखाण का भंग नहीं होता।

२. प्रभु वर्धमान अपापा नगरी में आये। वहाँ पर सिद्धार्थ वणिक की घर भिक्षार्थ पहुंचे। वहाँ बैठे हुए उस वणिक के मित्र खरक वैद्य ने प्रभु को देखा। वैद्य को लगा की प्रभु के शरीर में कहीं शल्य है। अतः वैद्य सिद्धार्थ वणिक को साथ लेकर जहाँ प्रभु काउस्सग्ग ध्यान में खडे थे वहा पहुँचा और प्रभु के शरीर की जांच की, कान में शल्य देख संडासीओं से प्रभु के कान में से दोनो खिले खींच निकाले। प्रभु को संरोहिणी नामक औषधी से अच्छा कर खरक वैद्य अपने स्थान पहुंचे।

३. जिन जीवों को जिनेश्वर परमात्मा के वचनों की प्राप्ति होती नहीं वे जीव संसार में भटकते है और जिनको मिले हैं वे जीव भवभ्रमण से अटके है। हम आज तक भटक रहे हैं, यही बात बता रही है कि हमें जिनवाणी नहीं मिली, समझे नहीं. इसीलिए तो श्री शांतिसूरिश्वरजी महाराज हम सभी को जीव विचार के माध्यम से जिनेश्वर परमात्मा की वाणी समझाते हैं। जीव कहां भटकता है, कैसे हाल हुए हैं, उसका परिचय कराते हैं।

४. पेट भरने के लिए गायें वन में जाती है, चारा चरती चरती चारों तरफ घूमती है, परंतु उनका चित्त तो अपने बछडों में ही होता है।
चार, पांच सहेलियाँ मिलकर पानी भरने जाती है, हंसी ठिठोली करती है, बांते करती है, एक दुजे को ताली देती है, परंतु उनका चित्त तो अपने बेडे में, घडे पर ही होता है।

५. ① पुरूषलिंग अर्थात पुरूष शरीर से मोक्ष मे जाये वह पुरूषलिंग सिद्ध कहलाता है। उदा: गौतमस्वामी। ② कृत्रिम नपुंसक वेद पाकर नपुंसक शरीर से जो मोक्ष में जाये वह नपुंसकलिंग सिद्ध कहलाते है। उदा: गांगेय।
③ कोई भी पदार्थ या अवस्था देखकर उसके निमित्त से वैराग्य पाकर चारित्र लेकर मोक्ष में जाये वह प्रत्येक बुद्ध सिद्ध कहलाते है। उदा: करकंडु राजर्षि
④ गृहस्थ वेष में जो मोक्ष में जाये वह गृहस्थलिंग सिद्ध कहलाते है। उदा: भरत चक्रवर्ती।